# माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

20 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायें ↓

| परीक्षा का विषय | विषय कोड | | | परीक्षा का माध्यम |
|---|---|---|---|---|
| Hindi | 4 | 0 | 1 | English |

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

[redacted]

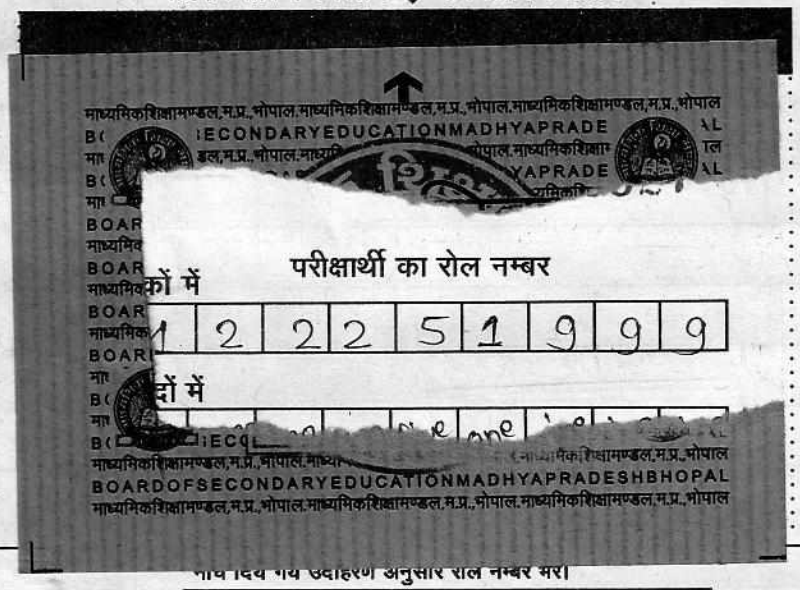

माध्यमिकशिक्षामण्डल,म.प्र.,भोपाल BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में

| 1 | 2 | 2 | 2 | 5 | 1 | 9 | 9 | 9 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

शब्दों में

नीचे दिये गये उदाहरण अनुसार रोल नम्बर भरें।

| उदाहरणार्थ | 1 | 1 | 2 | 4 | 3 | 9 | 5 | 6 | 8 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | एक | एक | दो | चार | तीन | नौ | पाँच | छः | आठ |

क – पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंको में 1 शब्दों में one

ख – परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक कक्ष 4 (B)

ग – परीक्षा की दिनांक 18 02 2022

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

H.S. C.No.222007

| पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर | केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर |
|---|---|
| Meena Mathur<br>Mmathur | |

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जायें ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तनुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया अन्दर के पृष्ठों के अनुरुप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी अंकों का योग सही है।

**निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदाकिंत संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।**

| उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा | परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा |
|---|---|
| N.K. Gupta<br>018782 | M.S.MANDLOI<br>H-013119 |

नोट :– ''हायर सेकेन्डरी परीक्षा में केवल वाणिज्य संकाय के विषयों तथा हाईस्कूल परीक्षा में प्रायोगिक विषय को छोड़कर शेष विषयों हेतु नियमित एवं स्वाध्यायी छात्रों के लिये प्रश्न पत्र 100 अंकों का होगा किन्तु नियमित छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक का 80% अधिभार एवं स्वाध्यायी छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक ही अंकसूची में प्रदर्शित किये जायेंगे।''

केवल परीक्षक द्वारा भरा जायें

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्ठी करें

| प्रश्न क्रमांक | पृष्ठ क्रमांक | प्राप्तांक (अंकों में) |
|---|---|---|
| 1 | | |
| 2 | | |
| 3 | | |
| 4 | | |
| 5 | | |
| 6 | | |
| 7 | | |
| 8 | | |
| 9 | | |
| 10 | | |
| 11 | | |
| 12 | | |
| 13 | | |
| 14 | | |
| 15 | | |
| 16 | | |
| 17 | | |
| 18 | | |
| 19 | | |
| 20 | | |
| 21 | | |
| 22 | | |
| 23 | | |
| 24 | ✓ | |
| 25 | 7 | |
| 26 | | |
| 27 | | |
| 28 | | |

कुल प्राप्तांक शब्दों में

& Copier Label ST-1

A4 99.1mm x 33.9m

mm x 16

विशेष नोट :– सिलाई खुली हुई अथवा क्षतिग्रस्त उत्तर पुस्तिका को न तो पर्यवेक्षक वितरण करें और न ही छात्र उपयोग में ले। ऐसी उत्तर पुस्तिका में लिखें उत्तरों का मूल्यांकन नहीं किया जायेगा।

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जायें → केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जायें → परीक्षार्थी द्वारा भरा जायें →

प्रश्न क्र.

## प्र. क्रमांक 01

सही विकल्प चुनकर लिखिए →

(अ) (iii) सूरदास ।

(ब) (iv) धोखा ।

(स) (iii) शोक ।

(ii) प्रशासनिक अधिकारी द्वारा ।

(इ) (iv) बहुव्रीहि ।

(ई) (i) तारकेश्वरनाथ ।

## प्र. क्रमांक 02

सही जोड़ी मिलाकर लिखिए →

(अ) संस्कृति → भदंत आनंद कौसल्याय

(ब) कन्यादान → ऋतुराज

(स) मैं क्यों लिखता हूँ → अज्ञेय

(द) अधिक बोलने वाला → वाचाल

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

(इ) प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ → चौपाई छंद

( नाच न जाने आँगन टेढ़ा → लोकोक्ति।

प्र० क्रमांक 03

सत्य / असत्य लिखिए →

M

(अ) सत्य।

P

B (ब) असत्य।

S (स) सत्य।

E (द) सत्य।

इ) सत्य।

(ई) असत्य।

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

## प्र० क्रमांक 04

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए →

(अ) शरद ।

(ब) इंदौर ।

(स) बेल्जियम ।

(द) भानपुरा ।

(इ) कमलेश्वर ।

(फ) छः ।

(उ) चार ।

## प्र० क्रमांक 05

एक वाक्य में उत्तर लिखिए →

(अ) भगवान शिव / शंकर का धनुष श्री राम ने तोड़ा ।

प्रश्न क्र.

(ब) कवि के अनुसार बसंत ऋतु की आभा 'अट' नहीं रही है।

(स) उपमा अलंकार के 4 अंग होते हैं →
(1) उपमेय
(2) उपमान
(3) वाचक शब्द
(4) साधारण धर्म।

(द) 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' में वीर रस है।

(इ) जो शब्द सबसे कम समझ में आते हैं और जिनका प्रयोग / उपयोग होता है सबसे अधिक → वे 'सभ्यता और संस्कृति'।

जापान के हिरोशिमा में अणु बम गिराया गया था।

(उ) 'अब चला जाए' → भाव वाच्य है।

M P B S

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMA...YAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUC

प्रश्न क्र.

## प्र. क्रमांक 06 (अथवा)

अ) भक्तिकालीन काव्य की विशेषताएँ →

(1) भक्तिकाल के साहित्य में भक्ति भावना की प्रधानता रही।

(2) सभी कवियों ने समाज सुधार, समाज के उत्थान और धार्मिक एकता को प्रेरित करते हुए रचना की।

(3) भक्तिकाल में अवधी तथा ब्रज भाषा का प्रचार - प्रसार हुआ।

## प्र० क्रमांक 07

अ) उद्धव के व्यवहार की तुलना कमल के पत्ते से की गई है जो पानी में रहते हुए भी उस पर पानी की एक बूँद भी नहीं टिकती, तेल में डूबे डूबी मटकी से भी की गई है जिस पानी की एक बूँद भी नहीं ठहरती। उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश की तुलना कड़वी ककड़ी से की गई है।

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

## प्र० क्रमांक 08

अ) तुलसीदास → • रचनाएँ → (1) रामचरितमानस
(2) गीतावली

• काव्यगत विशेषताएँ →

(1) भाव पक्ष →

(क) भक्ति भावना → तुलसीदास जी प्रभु श्री राम के अनन्य भक्त थे। ...की भक्ति दास भाव की थी।

(ख) ... योजना → तुलसीदास के काव्य में कई रसों की छटा विद्यमान है। उनके काव्य का प्रमुख रस शांत रस है।

कला पक्ष →

(क) भाषा → तुलसीदास के काव्य में अवधी तथा ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।

(ख) छंद → तुलसीदास के काव्य में कई छंद देखने को मिलते हैं जैसे → दोहा, सोरठा आदि। उनके काव्य का मुख्य छंद चौपाई है।

MPBSE

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

## प्रं० क्रमांक 09

उ) महाकाव्य और खण्डकाव्य में अंतर →

| | महाकाव्य | खण्डकाव्य |
|---|---|---|
| (1) | महाकाव्य के ~~जी~~ में नायक के जीवन का वृहद चित्रण होता है। | खण्डकाव्य में नायक के जीवन के किसी खण्ड का स्थिर चित्रण होता है। |
| (2) | महाकाव्य में अनेक सर्ग होते हैं। | खण्डकाव्य में एक ही सर्ग होता है। |
| (3) | महाकाव्य का कलेवर विस्तृत होता है। | खण्डकाव्य का कलेवर सीमित होता है। |

M P B S E

## प्रं.क्रमांक 10

उ. अनुप्रास अलंकार → काव्य / कविता में जहाँ किसी वर्ण की आवृत्ति बार-बार हो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

जैसे → चारु चंद्र की चंचल किरणे
खेल रही थीं जल-थल में।

यहाँ 'च' वर्ण की आवृत्ति हो रही है।

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION



प्रश्न क्र.

## प्र० क्रमांक 11

| | नाटक | एकांकी |
|---|---|---|
| (1) | नाटक में कई अंक होते हैं। | एकांकी में एक अंक होता है। |
| (2) | नाटक में लगभग तीन घण्टे का समय लगता है। | एकांकी में लगभग आधे घण्टे का समय लगता है। |
| (3) | स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी जयशंकर प्रसाद के नाटक हैं। | 'एक बूंद' जयशंकर प्रसाद की एकांकी है। |

MPBSE

## प्र० क्रमांक 12 (अथवा).

उ). बालगोबिन भगत की पुत्रवधु उसे अकेला इसलिए नहीं छोड़ना चाहती थी क्योंकि वे एक साधु स्वभाव के व्यक्ति थे। तथा वे अपने खाने-पीने का ध्यान नहीं रखते थे। इसलिए उनकी पुत्रवधु उनकी देखभाल के लिए उन्हें अकेले नहीं छोड़ना चाहती थी।

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक 13 (अथवा)

उ. महावीरप्रसाद द्विवेदी →

- रचनाएँ → ① साहित्य सीकर
  ② रसज्ञ रंजन

- भाषा - शैली → महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की भाषा - शैली सहज और ~~स्वाभाविक~~ है। स्वाभाविक है।

- भाषा → भाषा पर द्विवेदी जी का पूर्ण अधिकार है। उन्होंने अपने काव्य में खड़ी बोली का प्रयोग बहुत ही सरल और सहज ढंग तरीके से किया है। भाव के अनुरूप भाषा बदलती रही रहती है।

- शैली → द्विवेदी जी ने अपने काव्य में आलोचनात्मक, परिचयात्मक, विवेचर विचारात्मक, विवरणात्मक आदि शैलियों का प्रयोग किया है।

MPBSE

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

## प्र० क्रमांक 14

उ). भोलानाथ एक छोटा बच्चा था, बच्चों के की रूचि सबसे अधिक खेल में होती है और उन्हें यदि उनकी उम्र के बच्चे मिल जाएँ तो वे सबकुछ भूलकर खेल में रम जाते हैं। यही कारण था भोलानाथ भी अपने साथियों को देखकर सिसकना भूल जाता है।

MPBSE

## प्र० क्रमांक 15

उ). (1) नौ दो ग्यारह होना → भाग जाना।

वाक्य प्रयोग → पुलिस के आते ही चोर नौ दो ग्यारह हो गए।

आँखो का तारा → बहुत प्यारा

वाक्य प्रयोग → सीता अपने पिता जी की आँखो का तारा है।

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMAD

प्रश्न क्र.

## प्र० क्रमांक 16

30. अतिश्योक्ति अलंकार → काव्य में जहाँ लोक मर्यादा से बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बात कही जाए वहाँ अतिश्योक्ति अलंकार होता है।

जैसे → "हनुमान की पूँछ मे लगन न पाई आग।
लंका सारी जल गई, गये निशाचर भाग"॥

## प्र० क्रमांक 17

| | संधि | समास |
|---|---|---|
| ① | संधि में दो वर्णों का मेल होता है। | समास में दो पदों का मेल होता है। |
| ② | संधि में वर्णों को अलग करने की एक प्रक्रिया को संधि विच्छेद कहते हैं। | समास में पदों को अलग करने की प्रक्रिया को समास विग्रह कहते हैं। |
| ③ | संधि तीन प्रकार की होती है। | समास छः प्रकार के होते हैं। |
| ④ | उदाहरण → विद्यालय → विद्या + आलय | राजपुत्र → राजा का पुत्र। |

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक 20

संकेत → माँ ने ............ दिखाई मत देना।

संदर्भ → प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग - 2 के पाठ → कन्यादान से लिया गया है जिसके रचयिता ऋतुराज जी है।

प्रसंग → प्रस्तुत पद्यांश में माँ अपनी बेटी को स्त्री जीवन की सीख दे रही है।

व्याख्या → माँ कहती है कि पानी में अपनी सुंदरता देखकर उस पर मुग्ध मत होना। माँ अपनी बेटी को समझाती हुई कहती है की आग रोटियाँ सेकने के लिए होती है। स्वयं को जलाने के लिए नहीं। माँ फिर समझाती है कि वस्त्र और आभूषण स्त्री जीवन के बंधन होते हैं तुम इनके भ्रम में मत पड़ना। माँ कहती है कि लड़की होना परंतु लड़की जैसी दिखाई मत देना अर्थात लड़की जैसी दुर्बल तथा भयभीत मत होना।

विशेष → (1) माँ बेटी को स्त्री - जीवन की सीख दे रही है।

M P B S E

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

(1) भाषा सरल और सहज है तथा भाव के अनुरूप है।

## प्र० क्रमांक 2।

संकेत → नाटकों मे _ _ _ _ _ _ _ _ _ गँवार होने का।

संदर्भ → प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग - 2' के पाठ → 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' से लिया गया है।

प्रसंग → प्रस्तुत गद्यांश में द्विवेदी जी स्त्री शिक्षा के समर्थन में तर्क दे रहे हैं।

अर्थ → द्विवेदी जी कहते हैं की नाटकों में स्त्रियों का प्राकृत में बोलना उनके अपढ़ होने का प्रमाण नहीं है क्योंकि उस जमाने जन-सामान्य में प्रचलित भाषा संस्कृत ही थी। वे कहते हैं की प्राकृत ही थी। इसका प्रमाण बौद्धों के ग्रन्थों में मिलता है। वे कहते हैं कि स्त्रियाँ संस्कृत नहीं बोल सकती थी क्योंकि उस समय संस्कृत गिने-चुने लोग ही बोल पाते थे। संस्कृत न बोल सकना उनके गँवार और अपढ़ का होने का सबूत नहीं है।

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

ser, Inkjet & Copier Label ST-16 A4 99.1mm x 33.9mm x 16



प्रश्न क्र.

विशेष → (1) भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है।
(2) स्त्रियों को पढ़ा-लिखा होने के बताने का प्रयास किया है।

प्र० क्रमांक 23

विज्ञान: वरदान भी अभिशाप भी।

रूपरेखा → (1) प्रस्तावना
(2) विज्ञान का अर्थ
(3) विज्ञान के प्रयोग
(4) चिकित्सा के क्षेत्र में
(5) एक सिक्के के दो पहलू
(6) उपसंहार

(1) प्रस्तावना → आज का युग विज्ञान का युग माना जाता है। आज विज्ञान ने मानव क्रांति उत्पन्न कर दी है। विज्ञान की मदद से आज मानव विश्व का बुद्धिजीवी प्राणी बन गया है। विज्ञान के द्वारा आज मनुष्य किसी भी कार्य को कर सकता है। विज्ञान ने मानव को ऐसे साधन उपलब्ध कर दिए जिससे मानव अंतरिक्ष

M P B S E

प्रश्न क्र.

M P B S E

में का न… सकता है। विज्ञान के बिना आज का मानव जीवित एक क्षण भी नहीं रह सकता। विद्युत विज्ञान की सबसे अद्भुत देन है। मानव जीवन पूरी तरह विज्ञान पर आश्रित है।

(2) विज्ञान का अर्थ → विज्ञान दो शब्दों से मिलकर बना है → वि + ज्ञान अर्थात विशेष ज्ञान। किसी विषय के बारे में क्रमबद्ध तरीके से किया गया अध्ययन ही विज्ञान कहलाता है।

(3) विज्ञान का प्रयोग → आज विज्ञान के प्रयोग हर क्षेत्र में किए जा रहे हैं। विज्ञान ने शिक्षा के क्षेत्र में भी अद्भुत चमत्कार किए हैं। आज कोई भी छात्र किसी विषय की जानकारी इंटरनेट की मदद से घर बैठे जान सकता है। बड़े-बड़े गुणा, भाग आदि का हल कम समय में प्राप्त कर सकता है। विज्ञान ने कृषि तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी अनेक चमत्कार किए हैं। विज्ञान द्वारा किसी गाँव का किसान घर बैठे कृषि संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकता है।

(4) चिकित्सा के क्षेत्र मे → विज्ञान ने चिकित्सा के क्षेत्र मे उत्तरोत्तर उन्नति की। विज्ञान की सहायता से आज असाध्य रोगों का इलाज भी संभव हो पाया है जैसे कैंसर, हैजा आदि के इलाज विज्ञान ने ही संभव किए हैं।

(5) एक सिक्के के दो पहलू → हर एक वस्तु के दो पहलू होते हैं। विज्ञान के भी दो पहलू हैं विज्ञान हमारे लिए वरदान और अभिशाप दोनों है। विज्ञान का दुरुपयोग हमारे / मानव जीवन के विनाश का कारण हो सकता है। इसलिए विज्ञान का उपयोग सकारात्मक रूप से किया जाना चाहिए।

(6) उपसंहार → विज्ञान स्वयं में एक शक्ति नहीं, ये मानव के हाथ में आकर ही शक्ति प्राप्त करता है। इसलिए मानव को विज्ञान का उपयोग सकारात्मक रूप से करना चाहिए। हमें विज्ञान का गुलाम न बनकर इसे अपना सेवक बनाना है। →

MPBSE

## माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायें ↓

4 पृष्ठीय

| परीक्षा का विषय | विषय कोड | परीक्षा का माध्यम |
|---|---|---|
| Hindi | 4 0 1 | English |

परीक्षा का दिनांक 18 02 2022

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, म.प्र., भोपाल
BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में: 2 2 2 5 1 9 9 9

शब्दों में

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायें →

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

H.S. C. No. 222007

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

बिहारीलाल कुशवाहा

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक ....................................

प्रश्न क्र.

"सुख सुविधाये जो दी विज्ञान ने
हमें इनका गुलाम न बनकर, इन्हें सेवक बनाना है।
तभी हम सफल, सक्षम और बलशाली बनेंगे
हमें विज्ञान संग, स्वयं का अस्तित्व
अस्तित्व जगाना है"

M P B S E

पृष्ठ के अंकों का योग

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

05 प्र० क्रम

आवे

सेवा में,

श्री मान् जिलाधीश
महोदय, छतरपुर
(म० प्र०)

सविनय महोदय,

Oddy

सविनय विनम्र निवेदन है कि मध्यप्रदेश मंडल द्वारा कक्षा 10वीं की वार्षिक परीक्षाएँ दिनाँक 18 फरवरी से प्रारंभ की जा रही हैं। हमारे क्षेत्र में लाउड-स्पीकर की तेज ध्वनि होने के कारण हमें परीक्षा की तैयारी करने में असुविधा हो रही है। कृपया लाउडस्पीकर पर प्रतिबंध लगाने की कृपा करें। मैं आपकी आभारी रहूँगी।

धन्यवाद !

प्रार्थी
अ, ब, स

दिनाँक → 18/02/2022

M
P
B
S
E

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

(I) शीर्षक → 'सामाजिक समरसता' ✓

(II) सामाजिक ~~समरसता~~ जीवन के अन्तर्विरोधों को समाप्त करने का लक्ष्य ही सामाजिक समरसता का आधार है।

1.1 पारस्परिक सहयोग और समन्वय के साथ सहानुभूति सामाजिक समरसता के लिए अनिवार्य शर्त है।

MPBSE

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक 19

कोविड-19 → संवाद लेखन

रमेश → ~~कोविड-19~~ अरे! राजेश तुम जानते हो कोरोना कितनी व्यापक बीमारी है।

राजेश → हाँ! कोरोना बहुत संक्रामक बीमारी है। जो संपर्क में आने से फैलती है।

रमेश → हाँ-हाँ। हमें कोरोना से बचने के उपाय करने चाहिए तथा गाइडलाइन का पालन करना चाहिए।

राजेश → मास्क लगाना, वैक्सीन लगवाना, घर पर रहना, तथा सामाजिक दूरी बनाए रखना ही तो कोरोना बचाव के नियम हैं।

श → राजेश, कोरोना ने भारत विश्व की आर्थिक व्यवस्था पर प्रभाव डाला है।

राजेश → हाँ। रमेश शिक्षा पर कोरोना का भी बहुत प्रभाव पड़ा है।

श → हाँ। मैं यही कहूँगा की सभी को कोरोना के बचाव के उपाय करना चाहिए।

MPBSE